प्रो० धनंजय कुमार
सहायक प्राध्यापक
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय
राजनगर (मधुबनी)

B.Com. (Hons)
P1 – A/cs & Finance
Paper – I
Financial Accounting
Date – 28.05.2020

UNIT – I
TOPIC – ACCOUNTING CYCLE

TRIAL BALANCE
तलपट या परीक्षा सूची.

जैसा कि हमने देखा कि प्रारंभिक बहियाँ और Journal व्यवसायिक लेनदेनों का प्रारंभिक लेखा करती है. ये सभी लेनदेन मुख्य रूप से वित्तीय स्वभाव के होते है. अब इसके बाद Journal एवं सहायक बहियों की सहायता से Ledger खाता बनाया जाता है. इस ledger खातों का Debit (डेबिट) या Credit (क्रेडिट) शेष होता है. खाता-बही के बनाने एवं उनका शेष (Balance) निकालने के बाद लेखांकों की गणितीय शुद्धता की जाँच करने हेतु एक विवरण बनाया जाता है जिसे तलपट या परीक्षा सूची कहा जाता है.

अत: एक ऐसा विवरण जो खाता बही के डेबिट एवं क्रेडिट शेष से लेखांकों की गणितीय शुद्धता की जाँच के उद्देश्य से बनाया जाता है उसे Trial Balance (तलपट) कहा जाता है.

कुछ विद्वानों ने इसे निम्न प्रकार से परिभाषित किया है:—

(i) कार्टर के अनुसार — " तलपट नाम एवं जमा शेषों की एक सूची है, जो खाताबही के खातों से तैयार की जाती है, जिसमें रोकड़ (Cash) एवं बैंक को भी शामिल किए जाते है."

(ii) जे०आर० बाटलीबॉय के अनुसार — " तलपट खाताबही के डेबिट व क्रेडिट पक्ष के शेषों को लेकर तैयार किया गया एक विवरण है जिसका उद्देश्य खाता-बही की गणितीय संबंधी शुद्धता की जाँच करना है."

Scanned with CamScanner

(iii) स्पाइसर एवं पेगलर के अनुसार :— "निश्चित तिथि पर सम्पूर्ण पोस्टिंग हो जाने के पश्चात् शेषों (Balances) की जो सूची तैयार की जाती है उसे तलपट कहा जाता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि तलपट खाता-बही के खातों के डेबिट तथा क्रेडिट पक्षों के योगों अथवा खातों के शेष की वह सूची है जिससे दोनों पक्षों का योग मिल जाना इस बात का प्रमाण होता है कि प्रत्येक लेन-देनों का Journal से Ledger में Posting सही रूप से की गई है तथा गणितीय रूप से भी शुद्ध है। अतः तलपट वे विवरण है जिसे खातों के शेष से तैयार किया जाता है।

तलपट की विशेषता

तलपट की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :—

(i) किसी विशेष तिथि को तैयार करना

(ii) प्रत्येक खाता-बही के खाते की सूची होना।

(iii) खाता-बही के शेष, योग एवं शेष व योग से तैयार किया जाना।

(iv) तलपट के डेबिट एवं क्रेडिट पक्ष का योग बराबर होना, जो लेखांकन की गणितीय शुद्धता का प्रमाण होता है।

(v) वित्तीय विवरण अथवा अंतिम खाते तैयार करने से पूर्व तलपट का निर्माण करना।

(vi) तलपट के डेबिट व क्रेडिट पक्ष के योग का बराबर होना लेखांकन की शुद्धता का अंतिम प्रमाण नहीं होता अर्थात् बराबर होने के बावजूद भी कुछ अशुद्धियाँ रह सकती हैं। इसलिए यह लेखांकन की पूर्ण शुद्धता की गारंटी नहीं देता है।

तलपट का उद्देश्य

तलपट का निर्माण निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए आवश्यक होता है :—

(i) गणितीय शुद्धता की जाँच करने, अर्थात् व्यावसायिक लेनदेनों का लेखा ठीक प्रकार से लेखा-पुस्तकों

Scanned with CamScanner

में लिखा गया है, एवं उनकी खतौनी (Posting), तथा शेष सही निकाला गया है, तो तलपट की डेबिट तथा क्रेडिट का योग समान होगा।

(ii) खातों की संक्षिप्त सूचना प्रदान करना अर्थात् तलपट में सभी खातों की सूची एवं उनके अंतिम शेष के बारे में सूचना होती है जिससे खातों की संक्षिप्त स्थिति की उपलब्धी आसानी से हो जाती है।

(iii) अंतिम खाते बनाने में सहायक होना अर्थात् लेखांकन वर्ष के पश्चात् उसका प्रथम उद्देश्य व्यवसायिक गतिविधियों का परिणाम ज्ञात करना होता है। परिणाम से तात्पर्य व्यवसाय को होने वाले लाभ या हानि की रकम एवं संपत्ति व दायित्व के मध्य की जानकारी प्राप्त करना है। अतः Trial Balance के आधार पर Trading Account, Profit & loss A/c तथा Balance sheet का निर्माण कर यह जानकारी प्राप्त किया जा सकता है।

(iv) समायोजनाओं (Adjustment) के बनाने में सहायक होना अर्थात् अंतिम खातों का निर्माण करते समय stock, outstanding एवं Prepaid Expenses, जैसे तथा अन्य समायोजनाएँ करनी पड़ती है। समायोजना के व्यवहारों की पहचान करने के लिए Trail Balance का अध्ययन करना आवश्यक है, क्योंकि कोई व्यवहार Trial Balance ऊपर किया गया है तो उसे समायोजना में शामिल नहीं किया जायेगा।

FORMAT OF TRIAL BALANCE

PARTICULARS (Name of Ledger Account)	L.F	Amount (रु.)	
		डेबिट (Dr.)	क्रेडिट (Cr.)
(1)	(2)	(3)	(4)

L.F. = Ledger folio

Scanned with CamSc

Difference between Trial Balance and Balance sheet.
तलपट एवं आर्थिक चिट्ठा में अंतर.

आधार	तलपट	आर्थिक चिट्ठा
1. उद्देश्य	इसका मुख्य उद्देश्य लेखा पुस्तकों की गाणितीय शुद्धता की जाँच करना होता है.	जबकि इसका उद्देश्य संपत्ति एवं दायित्व के मदों एवं स्वभाव की जानकारी प्रदान करना होता है.
2. अवधि	यह सामान्यतया मासिक या अर्धवार्षिक के बाद बनाया जाता है.	जबकि यह वार्षिक या अर्द्धवार्षिक अवधि की समाप्ति पर बनाया जाता है.
3. पक्ष	इसके दो पक्ष होते हैं - नाम पक्ष एवं जमा पक्ष.	जबकि इसके भी दो पक्ष होते हैं, बायें पक्ष दायित्व और दायें पक्ष संपत्ति का होता है.
4. वित्तीय स्थिति	इससे संस्था की वित्तीय स्थिति का पता नहीं चलता है.	जबकि इससे संस्था की वित्तीय स्थिति का सही पता चलता है.
5. प्रमाण	इसे न्यायालय में सबूत के तौर पर प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है.	जबकि इसे न्यायालय में सबूत के रूप में पेश किया जा सकता है.
6. खातों की किस्म	इसमें Personal, Real, तथा Nominal तीनों खातों की शेष को दर्शाया जाता है.	जबकि इसमें केवल Personal तथा Real खाते के मदों को दिखाया जाता है.
7. प्रकाशन	इसकी नकल छपाई होती है और न ही इसे प्रकाशित करने की आवश्यकता है.	जबकि यह संपत्तियों के लिए अनिवार्य होता है.